*ओमशान्ति*

# सत्यता

ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ने के लिए पहले अपने आपको समझना, भगवान को जानना होता है। भगवान को जानना भी बहुत आवश्यक है, ताकि मैं अपने आपको समझ सकूँ। जब तक अपने आपको नहीं समझा, तो भगवान को भी नहीं समझेंगे। जब भगवान को नहीं समझेंगे तो अपने आपको नहीं समझ सकते। संसार ऐसा है जिसके वातावरण में झूठ ही झूठ है, सच नहीं है। दुनिया में चिंता, दु:ख, भय, डर के अलावा कुछ है ही नहीं। जैसे आँखों के सामने अंधियारा ही है। एक तो अंधियारा बाहर का है, दूसरा अंदर मन की आँखें बंद हैं, जो अपने आपको देख नहीं सकती। इस आँखों के द्वारा, चाहे कानों के द्वारा क्या सुन रहे हैं, क्या देख रहे हैं, ऐसे ही बोल रहे हैं। जब अपने संकल्पों को देखते, वाणी को देखते, कर्म को देखते हैं तब बाहर का कचरा अंदर चला गया, इस कारण सत्य परमात्मा से दूर हो गये। सचमुच आत्मा का जो असली रूप है, वो भी गुम हो गया। इसलिए ऐसे समय में हमने 70 साल ब्रह्माकुमारी बनकर देखा है, सत्यता के आधार से भगवान ने हमारी जीवन बना दी। ऐसी जीवन बनाई है, जो जीवन में सेफ्टी भी है, सच्चाई भी है, सफाई हमारा हिन्दी शब्द है, सेफ्टी कितनी बड़ी है। कभी भी किसी बात का डर, भय नहीं, चिंता नहीं, सेफ्टी के कारण। सच्चाई-सफाई होने के कारण सच्चाई का बल है। जब तक सफाई नहीं है, अंदर-बाहर देह सम्बन्ध, दुनिया का वातावरण अंदर चला गया तो अंदर से हमारे पास एक गीत है, मुखड़ा देख ले प्राणी, तुमने कितने पुण्य किये हैं, कितने पाप किये हैं। तो मुखड़ा देखने के लिए भी अंदर से क्या देखें। अंदर अन्तर्मुखी होकर देखें, सत्य परमात्मा को सामने रख कर देखें, मैंने कितने पुण्य किये हैं, कितने पाप किये हैं। पुण्य सबको बताये व दिखाये हैं, थोड़े भी किये होंगे, पाप छिपाये हैं। जब तक हमारी अर्न्तात्मा यही धंधा कर रही है, भले कितनी भी भक्ति,पूजा-पाठ करें वो सब क्या है, अंदर से देखें। पाप मैंने क्या किया, पुण्य क्या किया। इतनी रियलाइजेशन अंदर से बड़ा अन्दर से आँख खुलती है देखने के लिए। दिल साफ दर्पण को साफ करते हैं तो देखना मैंने क्या किया, और क्या करते हैं। भगवान कहते हैं कि इसको देखो भी नहीं, सुनो भी नहीं, तुमने किया किया है और तुमको क्या करना है, इसलिए दिल दर्पण से तुम अपना साफ करो। सभी मुझसे पूछते हैं कि मेडिटेशन में आप क्या करती हो, मैंने कहा दिल दर्पण साफ हो तो मैं अपना तो देखूँ ना। ये शीशे भी हैं। इसमें बाहर का दिखाई पड़ताहै। ये आँखों से बाहर का दिखाई पड़ता है, बाहर का आवाज भी सुनाई पड़ता है। अंदर का वो ईश्वर का आवाज न सुनाई पड़ता है और न ही दिखाई पड़ता है। इसलिए पहले दिल दर्पणको साफ करो। कई कहते हैं कि मैंने दुनिया देख ली है, सत्य की खोज में हूँ, सच्चाई की खोज में क्यों हो, क्योंकि सच्चाई नहीं दिखाई देती है। तो ही अपने अन्दर आता है कि दुनिया के दु:ख-धोखे से धोखा खाकर दु:खी हुए हैं। कहीं धोखा दिया है, कहीं धोखा खाया है। अंदर मनुष्य को बैराग भी आ रहा है, धोखा, दु:ख होकर वैराग आया है, परन्तु उससे लगाव छूटता नहीं है। जो चक्का में फँसे हैं लगाव के। लगाव पोजीशन, पैसे आदि का छोड़ता नहीं है, इसलिए झूठ है।

शरीर में आत्मा है तो अपने आपसे पूछें कि किस आधार से चल रहे हैं। भक्ति में भी मानते हैं अन्त मति सो गति। जैसे अंत में जो ख्याल आयेगा, जो जीवन में होगा, वह सामने आयेगा। इसलिए सत्य के मार्ग पर मुझे जाना है। इतना बस ख्याल भी आ जायेगा ना, वैराग आ जायेगा। वैराग यानि सब सम्बन्ध झूठ है, सच के मार्ग पर जाना है। वो सत्य परमात्मा नैन भी देता है, अंधकार भी मिटा देता है, ये कमाल है भगवान की। सर्वशक्तिवान बाप की। अंदर बहुत कुछ है, लेकिन शॉर्ट में यही सुनाऊँगी कि सत्य की जय है और झूठ का

खात्मा है। अपने से भी हो रहा है, दुनिया से भी झूठ जा रहा है। अभी कहाँ तक झूठ अपना तमाशा दिखायेगा, जा रहा है, लोगों में भी महसूसता आ रही है। सत्यता जैसे कि चारों ओर आयेगी। यही सभी को डर है कि 2012 में इस बार क्या होगा। पहले हम कहते थे, ये होगा, होने वाला है, उससे पहले कुछ करो, करो, तो नहीं मानते थे, अब कोई हर्जा नहीं है। अब मानने की घड़ियाँ लोगों की भी आ गई हैं, हमको 70 वर्ष पहले ही शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा उस साक्षात् करके इशारा दिया विनाश होने के पहले। कुछ नहीं करो, तन-मन-धन से समर्पण होकर मन-वचन-श्रेष्ठ ककरे समय संकल्प से जीवन सफल करो। ब्रह्मा बाबा की जीवन को सफल करने के लिए परमात्मा बाप ने उनको निमित्त बनाया। जो निमित्त बनी ब्रह्मा बाबा की हस्ती है, उसमें जिसको सत्यनारायण की कथा का गायन है कि सच्चाई से बेड़ापार है। परमात्मा खिवय्या के रूप में पार ले जाता है, वो संसार में 70 साल से इसी जीवन में कार्य करा रहा है। 70 साल पहले दुनिया ऐसी नहीं थी, इतना झूठ, पाप नहीं था, इतनी हिंसा नहीं थी, इतना स्वार्थ नहीं था, ऐसी मनुष्य की स्थिति नहीं थी, आज मनुष्य ऐसी स्थिति पर पहुँचा है, मौत सिर पर खड़ा है देखकर औरों की मौत अभी आता है कि क्या होगा, क्या होगा। हम बताते हैं कि सभी कुछ अच्छा होगा बशर्ते हमको अच्छा बनना पड़ेगा। जो ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिव बाबा ने सिखाया – सफाई, सच्चाई, सादगी तीनों रूपों से सफाई से सच्चाई परमात्मा की क्या है, परमात्मा कैसा है, उसका ज्ञान कितना सत्य है, उसके द्वारा जो श्रीमत मिलती है, श्रेष्ठ कर्म करने की, उससे कितनी शक्ति मिलती है। सच्चाई से शक्ति आ गई और भगवान हम बच्चों को कहते हैं कि तू इतना शान्ति से बैठ करके सच्ची दिल से देह सहित देह की सर्व बातों कोभूल एक मुझको याद करो। याद की अग्नि भी ऐसी तेज हो, इतनी लगन की अग्नि ज्वाला के समान हो, जिससे तुम्हारे 63 जन्मों के विकर्म मैं विनाश कर दूँ। प्रैक्टिकल अनुभव है जो संस्कापरों में पुराने विकार जो मिक्स थे, जल कर खाक हो गये, माया रावण के प्रभाव से संस्कारों में जो झूठ पाप भर गया है, कहते हैं लग्न की अग्नि से, त्याग वृत्ति से अंदर से नष्टोमोह: स्थिति में रहने के लिए अभी तुमने इस जन्म में जो भी पाप किये हैं, उसके रियलाइजेशन से अपने मुख अन्दर को देख परमात्मा को सामने रखो तो वह माफ कर दो, सच बता दो तो वह माफ करेगा। अब क्या करने का है, कर्मों की गुह्य गति समझा कर कहता है न सिर्फ कहता है शक्ति भी देता है। स्नेह से समझ भी देता है। समझ में अभिमान खत्म कर देता है। निमित्त भाव से, नम्रता स्वरूप से ज्ञान युक्त युक्तियुक्त ऐसे कर्म करो कि तुम्हारे श्रेष्ठ कर्म और पुण्य कर्म का खाता जमा होता जाये औरों के पाप जो किये हुए हैं और जो भी कर रहे हैं वो भी विचारे बदल जायें। बदल रहे हैं। ऐसे पहले सैकड़ों आत्माएँ थीं, फिर हजारों हुईं, अभी लाखों हैं। बदल रहे हैं, बदल जायेगी दुनिया। ये है सच। सच सच्चा सोना है, उसकी वैल्यू कितनी है, अगर 2 कैरेट भी, 4 कैरेट भी 8 कैरेट भी मिक्स है तो कहेंगे कि पता नहीं। औरों के लिए कहेंगे कि पता नहीं। भगवान कहते हैं पता नहीं तब तक हैं जब तक कि तुम लग्न की अग्नि से अंदर की अलाएँ को निकाल कर सच्चा सोना बन जाओ तो पारस बन जायेंगे। लोहे से खुद सोना बनाने के लिए पर तुम सच्चा सोना बन जाओ तो पहले तुमको मैं लोहे से सच्चा सोना बन दूँगा। अभी तुम बच्चों के द्वारा, औरों को ऐसा रंग लगे वो भी पारसमणि का काम करे। दूसरों को भी संग का रंग लगा कर ऐसा सच्चा बना दो।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com